केन्द्रीय सतर्कता आयोग

'ना' को अपनाओ भ्रष्टाचार मिटाओ

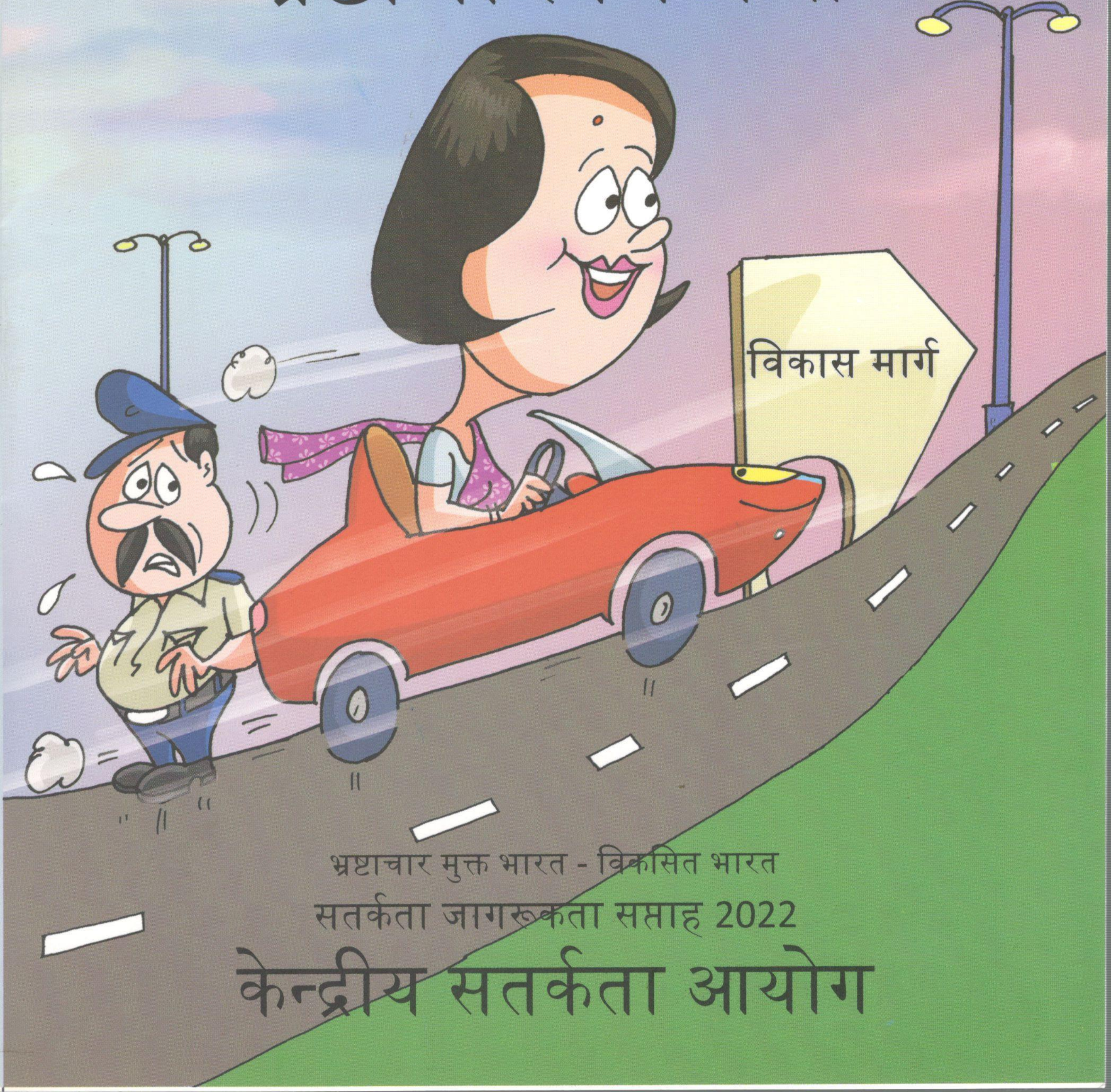

भ्रष्टाचार मुक्त भारत - विकसित भारत

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2022

केन्द्रीय सतर्कता आयोग

'ना' को अपनाओ
भ्रष्टाचार मिटाओ
नेहा अपनी मम्मी आशा के साथ 10 दिनों के लिए नानी के घर कार से जा रही थी।
गर्मी की छुट्टियों में नानी के घर जाने का मजा ही कुछ और है ।
यह दस दिन कैसे बीत जायेंगे, तुम्हें पता भी नहीं चलेगा।
अभी तो मुझे लॉन्ग ड्राइव और बाहर के नजारों का आनंद लेने दो ।

रास्ते में गाने सुनते-सुनते कब सिटी ट्रैफिक को क्रॉस करके नेशनल हाईवे पर पहुंच गए पता ही नहीं चला। खाली सड़क देख आशा की कार की स्पीड तेज हो गई।
थोड़ी देर बाद ही आशा को एक ट्रैफिक इंस्पेक्टर ने रोका जो कि अपनी इंटरसेप्टर कार के साथ खड़ा था।
इंटरसेप्टर कार हाईवे पर चलने वाले व्हीकल की स्पीड लिमिट को चेक करती है और ओवरस्पीड होने पर अलर्ट देती है।
सॉरी सर मुझे पता ही नहीं लगा कब स्पीड ज्यादा हो गई ।
मैडम, यह नेशनल हाईवे है और यहां पर परमीसिबल स्पीड लिमिट तय है। इससे ज्यादा स्पीड होने पर चालान भरना पड़ता है ।
और आपकी स्पीड तो तय सीमा से भी ऊपर थी ।
साथ में छोटी बच्ची भी है, कम से कम उसकी सुरक्षा का तो ध्यान रखना चाहिए था।

मुझे स्पीड का पता ही नहीं चला सर ।
अब आपको चालान भरना पड़ेगा ।
कितना चालान भरना है?
मैडम नियमानुसार 2000 रुपए।
क्या! इतना अधिक ?
पर अगर आप मुझे ₹500 देंगी तो मैं आपको जाने दूंगा।

वह कैसे?
मैडम, यह सब आप मुझ पर छोड़ दो। आप चिंता मत करो, मैं सब संभाल लूंगा।
पर आप मुझे ₹500 की रसीद तो देंगे ही ना ?
मैडम, मैं तो आपकी मदद करना चाहता था। ₹ 500 ज्यादा थोड़ी ना है।
नहीं सर। मैं पूरा चालान भरूंगी। आप प्लीज मुझे रसीद दीजिये।
आप क्यों चालान भरने की जिद कर रही हैं ? चालान के साथ साथ आपका लाइसेंस भी 3 महीने के लिए जब्त हो जायेगा।
तो क्या मैं इतने समय तक कार नहीं चला सकूंगी ?

जी नही ।
मैं बाजार का काम, बैंक, सास - ससुर को डॉक्टर
के पास ले जाना और नेहा को स्कूल से लेने
कैसे जाऊंगी ?
SCHOOL
मेरे पति भी अक्सर टूर पर रहते हैं।
बिना कार
मेरा काम नही
चल सकता।

इतनी देर से मैं यही तो कह रहा हूँ
कि मैडम इतनी टेंशन क्यों ले रही हो ?
मेरी मानिये, ₹ 500 में
सारी चिंताओं से मुक्ति पा लीजिए।
500₹
सुबह से 10 कार चालक
मेरी सलाह मान कर
आराम से जा चुके हैं।
आप भला क्यों
कानूनी पचड़े में पडती हैं ।
यह ट्रैफिक इंस्पेक्टर सुबह से 5000 रूपये
रिश्वत खा चुका है और देश को 20000 रूपये
का चूना लगा चुका है ।
क्या हुआ मैडम जी?
आप किस सोच में पड़ गयी ?
मुझे नियम
ऑनलाइन चेक
करने दीजिये ।

आशा मोबाइल से नियम को चेक करती है।
नियम के अनुसार तो दूसरी बार स्पीड क्रॉस होने पर ड्राइविंग लाइसेंस की जब्ती की जाती है। मैंने तो पहली बार ही स्पीड क्रॉस की है।
हाँ जी।
हाँ हाँ, पर चालान तो भरना पड़ता है ना ?
तो मैडम, 500 रूपए दीजिये और बेफिक्र होकर जाईये।
आशा के संस्कारों ने गलत काम के आगे झुकने से इन्कार कर दिया।
आशा ने चालान भरा और रसीद लेकर वह आगे बढ़ गई।

नानी का घर
नानाजी, मैं आ गयी ।
अरे वाह! मेरी प्यारी बच्ची आ गई।
पर तेरी मम्मी खुश नहीं लग रही। क्या बात है आशा ?
कुछ नहीं, बस यूँ ही।
नेहा ने अपने नाना को सारी बात बताई।
पहली बात यह कि हमें नियमों की जानकारी होनी चाहिए और उनका पालन करना चाहिए।
अगर गलती से या अनजाने में हम कोई नियम तोड़ भी दें तो हमें उसकी भरपाई कानूनी तरीके से करनी चाहिए।

छोटे-मोटे लालच जैसे गलत तरीके से पैसा बचाना, लंबी लाइन को देखकर पैसा देकर आगे पहुंच जाना, किसी काम को तुरंत करवाने के लिए रिश्वत देना जैसी चीजें गलत है।
₹
इससे हमें छोटी मोटी खुशी तो मिल सकती है पर वह संतोष नहीं मिल सकता जो नियमों और देश के प्रति अपने दायित्वों का पालन करके मिलता है।
यह छोटे-छोटे प्रयास ही हमें अच्छा नागरिक और देश को मजबूत राष्ट्र बनाते हैं।
देश में जो भी टैक्स या राजस्व प्राप्त होता है, वही राष्ट्र निर्माण में खर्च होता है।
जीएसटी
GST
आयकर
INCOME TAX
₹
₹
उसी से सड़कें, पुल, अस्पताल, स्कूल एवं सुरक्षा जैसी सुविधाएं नागरिकों को प्रदान की जाती हैं।

तो क्या ये सब सुविधाएं हमें हमारे पैसे से ही मिलती हैं?
हां नेहा!
आशा, तुमने इस घटना की शिकायत तो दर्ज करा दी है ना ?
नहीं पिताजी। पर मैं आज ही शिकायत दर्ज करा देती हूँ।
ठीक है। बेटा, एक और चीज।
बच्चे हमेशा अपने आसपास के बड़े लोगों को देखकर ही सीखते हैं, इसलिए हमारा आचरण हमेशा सही होना चाहिए।
अगर बड़े यह ठान लेंगे कि हमें देश के विकास हेतु नियमों और कर्त्तव्यों का पालन करना है, तभी हमारा देश विकास के पथ पर सही अर्थों में अग्रसर होगा।
रहे स्वयं के प्रति ईमानदार
बने देश के विकास में अहम् भागीदार

एक शुरुआत 'ना' से

- भ्रष्टाचार विभिन्न रूपों में प्रकट होता है जैसे रिश्वतखोरी, भाई-भतीजावाद, पक्षपात आदि।
- भ्रष्टाचार के दुष्प्रभाव सर्वविदित हैं।
- यह हमारे विकासात्मक प्रयासों को प्रभावित कर लोकतांत्रिक संस्थाओं को कमजोर करता है।
- जिस क्षण कोई अनैतिक प्रथाओं पर सवाल उठाना शुरू करता है और नियमों का पालन करके भ्रष्टाचार को चुनौती देता है, वहीं से परिवर्तन आरंभ होता है।
- किसी व्यक्ति को भ्रष्ट प्रथाओं का विरोध आरंभ करने के लिए किसी और की प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं होती है। अकेला एक व्यक्ति भी इसकी शुरुआत कर सकता है।
- भ्रष्टाचार से संघर्ष करने की दिशा में उठाया गया हर छोटा कदम एक बड़ा प्रभाव ला सकता है।

केन्द्रीय सतर्कता आयोग

सतर्कता भवन, ए-ब्लॉक, जीपीओ कॉम्प्लेक्स, आईएनए, नई दिल्ली - 110023

www.cvc.gov.in

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया Union Bank of India के सहयोग से प्रकाशित

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया द्वारा मुद्रित